बाबा ने निमंत्रण स्वीकार किया व मातेश्वरी के मुंबई आने का प्रोग्राम बनाया। मुंबई में मातेश्वरी हमारे साथ आठ मास रही तथा ऊषा बहन व शांता माता ने दिल से मातेश्वरी की सेवा की। हम सबने अद्भुत ज्ञान का खज़ाना व पालना मातेश्वरी से पाई। बाद में मातेश्वरी जी को ऑप्रेशन के कारण हमारे घर में दस मास रहना पड़ा फलस्वरूप हमारा ज्ञान का फाउण्डेशन बहुत मज़बूत हो गया।

ईश्वरीय सेवार्थ हम दोनों ने प्रदर्शनी का आयोजन किया और इस निमित्त दादी प्रकाशमणि जी का मुंबई आना हुआ और वे गामदेवी सेवाकेन्द्र पर जनवरी, 1969 तक रहीं। हम सबको दादी जी की बहुत सुंदर पालना मिली। बापदादा के वरदानों के फलस्वरूप हमने मिलकर ईश्वरीय सेवा की अनेक नई विधियाँ निकालीं जिससे विहंग मार्ग की सेवा शुरू हुई जोकि बाबा को बहुत पसंद थी। फिर 18 जनवरी 1969 को ब्रह्मा बाबा अव्यक्त हुए। ब्रह्मा बाबा के पार्थिव शरीर के अंतिम संस्कार की ज़िम्मेवारी दादी प्रकाशमणि जी ने मुझे दी तो मैंने ऊषा के साथ मिलकर अपने अलौकिक पिता के अंतिम संस्कार की विधि को पूर्ण किया। दादी प्रकाशमणि ने ब्रह्मा बाबा के पार्थिव शरीर को अग्निदान दिया।

प्रदर्शनी की सेवा के द्वारा विदेश का भी निमंत्रण मिला और जुलाई 1971 में हम पाँच लोग विदेश सेवा के लिए गए। ऊषा जी लौकिक कार्यवश दस दिन बाद विदेश यात्रा में सम्मिलित हुई। शिवबाबा की श्रीमत अनुसार पूर्व व पश्चिम दिशा में सेवाकेन्द्र खोलना था इसलिए इसी यात्रा के समय हांगकांग में ईश्वरीय सेवाकेन्द्र की स्थापना हुई। ऊषा व शीलइन्द्रा दादी वहाँ छह-सात मास रहे और सेवा की नींव पक्की कर सिंगापुर होते मुंबई लौटे।

सन् 1974 में हमें लंदन में अफ्रीका से राम भाई का निमंत्रण मिला और हम दोनों अफ्रीका की सेवा के लिए लंदन से निकले। फिर दादी जानकी जी को निमंत्रण दिया।

फिर ऊषा चार मास के लिए जापान की सेवा पर गई। सन् 1977 में जब दादी जी के साथ मेरा विदेश यात्रा पर जाना हुआ तब ऊषा अफ्रीका, मॉरिशियस की सेवा पर चार मास रही। वहाँ सेवा का बहुत विस्तार हुआ।

बाबा हमेशा मुरली में प्रेरणा देते थे कि चेरिटी बिगन्स एट होम अर्थात् अपने घर की भी ईश्वरीय सेवा करनी चाहिए इसलिए हमने अपने जन्मस्थान भावनगर में ईश्वरीय सेवायें की तब ऊषा बहन करीब दो मास भावनगर में रही। इसी दौरान अहमदाबाद में मकान मिला और हम दोनों ने मिलकर अहमदाबाद में सेवाकेन्द्र की स्थापना की। करीब 21 मास ऊषा बहन वहाँ रही। बाद में सरला बहन को पूना से अहमदाबाद भेजा गया तो ऊषा वापस मुंबई आ गई।

सन् 1983 में यूरोप की ईश्वरीय सेवा के लिए अव्यक्त बापदादा ने हम दोनों को भेजा तथा खास संदेश दिया कि हमें वैज्ञानिकों की भी सेवा करनी है। तब हमने अव्यक्त बापदादा को कहा कि वैज्ञानिकों की सेवा क्यों करनी चाहिए क्योंकि उनका पार्ट सिर्फ विनाश के साथ जुड़ा है तब अव्यक्त बापदादा ने कहा कि वैज्ञानिकों की ज़रूरत तो सतयुग में आप बच्चों की सेवा में विमान आदि बनाने के लिए होगी तो इनका भी अच्छा पार्ट है। वैज्ञानिकों की सेवा के फलस्वरूप जब ज्ञान सरोवर बना तब दादी जी ने हम दोनों को स्पार्क के द्वारा वैज्ञानिकों की आध्यात्मिक सेवा करने के निमित्त बनाया। उसी समय राजयोगा एज्यूकेशन एण्ड रिसर्च फाउण्डेशन की स्थापना हुई तथा उसके अंतर्गत विभिन्न विंग्स का गठन हुआ। मुझे ज्यूरिस्ट विंग तथा ऊषा जी को आर्ट एण्ड कल्चर विंग की ज़िम्मेवारी मिली। ऊषा जी ने आबू में होने वाले महोत्सवों, सम्मेलनों में नृत्य नाटिका, डांस, ड्रामा आदि द्वारा सांस्कृतिक सेवा कर सेवा में चार चांद लगाये। नये-नये गीत भी बनाये गये